International Journal of Multidisciplinary Research and Development 2014; 1(2): 149-151

International Journal of Multidisciplinary Research and Development

IJMRD 2014; 1(2): 149-151
www.allsubjectjournal.com
Received: 17-07-2014
Accepted: 31-07-2014
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact Factor: 3.762

Dr. Bhagat Singh
Associate Professor, Ancient Indian History, Culture & Archaeology,
Kurukshetra Univeristy, Kurukshetra

Correspondence:
Dr. Bhagat Singh
Associate Professor, Ancient Indian History, Culture & Archaeology,
Kurukshetra Univeristy, Kurukshetra

महाभारत युद्ध के सन्दर्भ में पुरातात्त्विक एवं साहित्यिक साक्ष्यों का आलोचनात्मक विश्लेषण

Dr. Bhagat Singh

महाभारत महाकाव्य, तत्त्कालीन युग का दर्पण है यह भारतीय साहित्य का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है जिसे हजारों वर्षों से भारतीय परम्परा व संस्कृति ने जीवन्त बनाए रखा है महाभारत भारतीय साहित्य का ही नही वरन् विश्व साहित्य का अद्भुत ग्रन्थ है।[1] इस ग्रन्थ में वर्णित नगरों का प्रख्यात पुरातत्त्विद प्रो. बी.बी. लाल ने पारम्परिक विवरण के द्वारा पुरातात्त्विक प्रमाणों से जोड़ने का प्रयास किया है महाभारत की प्रमुख कथा से जुड़े अधिकांश महत्त्वूपर्ण स्थलों ने अपने निम्न स्तरों से एक संस्कृति के ठोस प्रमाण दिए हैं; इस संस्कृति को पुरातत्त्विदों द्वारा चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति का नाम दिया गया है।[2]

महाभारत में प्राप्त विभिन्न विषयों के वर्णन का स्वरूप विश्वकोश सदृश है और वही शताब्दियों से इसकी लोकप्रियता का कारण है। वास्तव में स्वयं महाभारत में यह कथन उद्धृत है ''यहाँ जो भी है अन्यत्र पाया जा सकता है। जो नही है अन्यत्र नहीं पाया जा सकता है''[3] वस्तुतः इस प्रकार की महान् कृत्ति किसी एक व्यक्ति की हस्तकृति नहीं हो सकती थी न ही इसकी रचना किसी एक ही समय में की गई होगी। विद्वानों ने महाभारत में जैसा कि आज यह है कम से कम तीन प्रभावों की पहचान की है। पहला कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास द्वारा है जिसमें 8800 छंद हैं, 'जय' कहा गया है।[4] इसी ऐतिहासिक विजय को महाभारत कहा गया है। दूसरा वैशंपायन द्वारा लिखित है जिसमें 24000 छंद हैं, इसे 'भारत' कहा गया है। तीसरा (वर्तमान स्वरूप) सौत्र द्वारा रचित है जिसमें एक लाख छंदो की रचना की गई है, इसे 'महाभारत' कहा गया है।[5]

महाभारत का मूल विषय 'भरत वंशजो' (पाण्डवों व कौरवों) के बीच होने वाला युद्ध है पाणिनी सूत्र में उल्लिखित है कि 'संग्रामे प्रयोजन योद्धभ्यः' अर्थ – योद्धाओं के नाम पर युद्ध का नाम रखा जाता है। चूंकि कौरव और पांडव दोनों भरत वंशी थे इसलिए वे भारत नाम से अभिहित हुए और भरत वंश के वीरो के बीच हुए युद्ध की संज्ञा 'भरतो के महान् संग्राम' की महत्ती गाथा है।[6] कुरुक्षेत्र, पूर्व समय में किसी नगर का नाम न होकर एक विस्तृत भूखण्ड के रूप में जाना जाता था विस्तृत भू–भाग तीन भागों में विभाजित था कुरुजंगल, कुरूखास व कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र भोगौलिक रूप से सरस्वती, दृषद्वती और आपया नदियों से परिबद्ध था तैत्तिरीय आरण्यक में सर्वप्रथम इसके सीमावर्ती क्षेत्रों का वर्णन मिलता है। जिसके अनुसार इसके दक्षिण में खाण्डव (इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र), उत्तर में सुघ, दक्षिण–पश्चिम में परीणह और इसके भी पीछे मरूभूमि है। महाभारत और वामन पुराण के अनुसार सरस्वती और दृषद्वती मे मध्य की भूमि कुरुक्षेत्र कहलाती थी जिसके चारों कोनों में चार यक्ष प्रतिष्ठित थे, दक्षिण–पश्चिम में कपिल यक्ष, दक्षिण–पूर्व में मचक्रुक, उत्तर–पश्चिम में अरन्तुक और उत्तर–पूर्व में रन्तुक। कनिंघम के अनुसार यह पवित्र तीर्थ 160 मील के विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ है और महाभारत में वर्णित समन्तपंचक से मेल खाता है। इन्होनें एक जनश्रुति के आधार पर यहां 160 तीर्थों के होने की भी चर्चा की है।[6] इसी क्षेत्र में कौरव और पाण्डवों के बीच महाभारत का प्रलयंकारी युद्ध हुआ और यहीं भगवान् श्रीकृष्ण ने युद्धस्थल में मोह से ग्रस्त अर्जुन को वर्तमान ज्योतिसर के पास गीता का उपदेश दिया। निःसन्देह इस प्रदेश पर जितना प्रभाव इस घटना का पड़ा उतना किसी भी अन्य घटना का नहीं। कुरुक्षेत्र में राजा कर्ण का टिला, बाणगंगा, अमीन, और असंख्य ऐसे ऐतिहासिक स्थल हें जो आज भी हमें महाभारत के पात्रों ओर घटनाओं की याद दिलाते हैं। महाभारत महाकाव्य की मूल विषय वस्तु 'भरत वंशजों के बीच होने वाली युद्ध की घटना की ऐतिहासिकता न मानकर कल्पनात्मक बताया है' महाभारत के संबंध में मिलने वाले साहित्यिक तथा पुरातात्त्विक प्रमाणों के परस्पर विरोधाभासी होने के कारण मतभेदों का होना स्वाभाविक है। 14 सितंबर 1975 को डी0 सी0 सरकार ने, जो एक प्रसिद्ध पुरोलेखविद् हैं और भारत सरकार के भूतपूर्व प्रधान पुरालेखविद् थे, यू0 एन0 आई0 को स्पष्ट रूप से घोषित किया कि महाभारत ऐतिहासिकता से रहित एक दंत कथा है इस वक्तव्य से पूरे देश में विवाद छिड़ गया। उनका कहना है कि महाभारत का मूल केन्द्र बिंदु एक परिवार या जन जाति की शत्रुता एक साधारण युद्ध गान था, जिसके बहुत बाद के काल में महाकाव्य की पुराकथाएं विकसित होती चली गई।[8] इस प्रकार 'महाभारत युद्ध' के मिथक और यथार्थ के विवाद को बल मिला।

महाभारत युद्ध को मिथक मानने वाले विद्वानों का कहना हे कि वैदिक साहित्य में 'महाभारत युद्ध' का सन्दर्भ नही मिलता। साथ ही साथ चौथी शताब्दी ई0 पू0 पूर्व के साहित्य में भारत युद्ध का उललेख नहीं किया गया है।[9] यथार्थ के पक्ष में अपनी बात रखते हुए, महाभारत युद्ध की घटना को ऐतिहासिक मानने वालो का यह तर्क है कि महाभारत युद्ध की घटना ऋग्वेद के बाद की घटना है, इसलिए ऋग्वेद में इसका उल्लेख नहीं मिलता। वैदिक साहित्य में सामाजिक, धार्मिक कार्यो को अधिक स्थान दिया गया। यही कारण है कि इस प्रकार के साहित्य में युद्ध के लिए कोई स्थान नहीं मिलता।[10] डी0 सी0 सरकार का मानना है कि महाभारत का मूल केन्द्र बिन्दु एक परिवार या जन जाति की शत्रुता का साधारण युद्ध गान था। यदि सरकार की बात

मान ले और यदि महाभारत युद्ध एक पुश्तैनी लड़ाई थी तो यह समझ से परे है कि अन्य पारिवारिक संघर्षों को छोड़कर केवल इसी परिवारिक युद्ध का चयन सम्पूर्ण भारत में इसे महिमा मंडित क्यों किया गया। यह भी समझना होगा कि कुरुक्षेत्र के आस–पास 360 से भी ज्यादा धार्मिक क्षेत्र हैं जिनके नाम महाभारत की घटनाओं एवं पात्रों से जुड़े हुए हैं।[11] एच. डी. संकालिया का मानना है कि यदि महाभारत युद्ध की तिथि 3000 ई. पू. अथवा यहां तक कि 1400 ई. पू. मानी जाए, तो इसका अर्थ होगा कि महाकाव्य के नायक भीम अर्जुन, कर्ण एवं महाकाव्य के अन्य नायको ने मामूली लगने वाले पत्थर के टुकड़ों, छोटी गद्दाओं, गुलेल में प्रयोग होने वाले पत्थर के और पकी मिट्टी के गोलों से युद्ध लड़ा होगा। जबकि जिन अस्त्र–शस्त्रों का महाभारत महाकाव्य में उल्लेख किया गया हे वे 600 ई0 पू0 तक भी प्रयुक्त होते नहीं दिखाई पड़ते तथा 1100 ई0 पू0 से पहले तक तो उनका अस्तित्व था ही नहीं।[12] जहां तक शस्त्रों के प्रयोग का प्रश्न है मिराशी, संकालिया के तर्कों का खंडन करते हुए कहते हैं– 'ऋग्वेद में एक वर्णन है कि विषपाल का पैर कैसे कटा और कैसे आश्विन ने उसे एक लोहे का पैर दिया' ऋग्वेद में लिखित 'अयस' (लौहा) ई0 पू0 ग्यारवहीं सदी के बाद का नहीं है।[13]

जहां तक युद्ध में प्रयोग होने वाले लोहे के अस्त्र–शस्त्रों का सम्बन्ध है यह महाभारत युद्ध के पश्चात 1100 ई0 पू0 अतरंजीखेड़ा से प्राप्त हुई है। प्रो0 विभा त्रिपाठी द्वारा प्रारम्भिक काल की लौह तकनीक का अध्ययन आलमगीरपुर, अहिच्छत्रा, अल्हापुर, बैराट, हस्तिनापुर, कौशम्बी, जौधपुर, नोह, श्रावस्ती के उत्खनन से प्राप्त उपकरणों पर आधारित है, उनमें विशेष रूप से शिकार के उपकरण जैसे भालाग्र, नुकीले हथियार आदि हैं।[14] पाण्डवों और कौरवों ने अपनी सेना के क्रमशः 7 और 11 विभाग अक्षौहिणी में किये। एक अक्षौहिणी में 21870 रथ, 21870 हाथी, 65610 सवार और 109350 पैदल सैनिक होते हैं। यह प्राचीन भारत में सेना का माप हुआ करता था। हर रथ में चार घोड़े और उनका सारथी होता है हर हाथी पर उसका हाथीवान बैठता है और उसके पीछे उसका सहायक जो कुर्सी के पीछे से हाथी को अंकुश लगाता है, कुर्सी में उसका मालिक धनुष–बाण से सज्जित होता है। अतः महाभारत काल में जब भारत बहुत समृद्ध देश था, इतनी विशाल सेना का होना कोई आश्चर्य की बात नहीं, जिसमें की सम्पूर्ण भारत देश के साथ साथ अनेक विदेशी जनपदों ने भी भाग लिया था।[15] 634 ई0 पू0 में चीनी यात्री ह्वेनसांग कुरूक्षेत्र आया और उसने कुरूक्षेत्र से पश्चिम की तरफ अस्थिपुर नामक स्थान के बारे में बताया।

महाभारत युद्ध की घटना में यदि सत्यता का संपुट है तो यह घटना कब घटित हुई इसे लेकर आज तक विद्वानों में विवाद बना हुआ है। विभिन्न दृष्टिकोणों के आधार पर विद्वानों ने महाभारत युद्ध से सम्बन्धित तिथियाँ प्रस्तुत की हैं। महाभारत के युद्ध को दो महान् कालों–द्वापर तथा कलियुग के मध्य एक विभाजक रेखा बताया गया है।[16] ज्योतिष या नक्षत्र विज्ञान, वैदिक व संस्कृत साहित्य, ऐतिहासिक अभिलेख व पुरातत्त्व के माध्यम से विद्वानों ने महाभारत युद्ध की तिथियों को निर्धारण करने का आधार बनाया है।

इनके द्वारा निर्धारित की गयी तिथियाँ महाभारत महाकाव्य में वर्णित अन्तः साक्ष्यों पर आधारित है, किन्तु उनमें से अधिकांश ऐसे कथ्य है जो मुख्य कथा से प्रमाणिक नहीं हैं। उनमें से अधिकांशतः बाद में जोड़े गये हैं। हालांकि दूसरी ओर कुछ निश्चित तथ्य भी हैं जो कि प्रामाणिक है तथा युद्ध की कहानी का आन्तरिक भाग हैं।

महाभारत युद्ध की तिथि निर्धारण का प्रयास किया गया है। पुराण इस बात से एकमत हैं कि परीक्षित के जन्म तथा नन्द (424 ई. पू.) के राज्यभिषेक के बीच 1000 वर्षों का अन्तर है। पुराण भी यह कहते हैं कि, दस नक्षत्र बीच में बीते। (एक नक्षत्र का काल 100 वर्ष) इस प्रकार स्पष्ट है कि पुराणों के अनुसार परीक्षित व नन्द के बीच एक हजार वर्षों का अन्तर है। इस आधार पर महाभारत युद्ध की तिथि 1424 ई0 पू0 होती है।[17]

अतः पुराणों के आधार पर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि महाभारत युद्ध के बाद एक राजनैतिक शताब्दी का अंत हो गया।[18] बी. बी. लाल ने पुरातत्त्व के आधार पर समस्या का समाधान करने का प्रयास किया है। वैदिक और सम्बन्धित साहित्य को आधार बनाकर हेमचन्द्र राय चौधरी द्वारा बताई गई तिथि पर विचार करते हुए उसका समर्थन किया है। अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित, युधिष्ठिर के बाद सिंहासनारूढ़ हुए। पुराणों की वंशावली के अनुसार इनसे पाँचवे निचक्षु थे जिनके समय बाढ़ आने पर हस्तिनापुर डूब गया था।[19] कौशाम्बी में राज्य कर रहे उदयन वंशवली के आधार पर परीक्षित से 25 वें शासक थे, उदयन बुद्ध के समकालीन थे। बुद्ध का महापरिनिर्वाण 487 ई0 पू0 हुआ।

इस प्रकार पौरव नृपतियों में प्रत्येक के राज्य काल के लिए चौदह वर्ष अनुमानित कर दिए जायें तो 24ग14 कुल 336 वर्ष हुए। 500 ई0 पू0 में 336 वर्ष देने पर कुल 836 ई0 पू0 होता है। इसकी पुष्टि पुरातात्त्विक स्तर से प्राप्त रेडियो कार्बन (ब14) विधि की तिथियों से भी होती है। हस्तिनापुर मे भी बाढ़ के साक्ष्यों की पुष्टि होती है।[20] ऐहोल अभिलेख के माध्यम से महाभारत युद्ध की तिथि ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। ऐहोल (कर्नाटक) जैन मंदिर से प्राप्त प्रस्तर अभिलेख है जो चालुक्य नरेश पुलकेशीयन (609–642 ई.) का है। इसके अनुसार इस मंदिर का निर्माण महाभारत युद्ध के 3736 वर्ष तथा शक राजाओं के 556 साल पूर्ण हो जाने के बाद किया गया है। इस तरह 556 शक काल को आधार मानकर (556+78) = 634 ई. अनुसार (3736–634 ई.) 3102 ई. पू. महाभारत युद्ध की तिथि हमारे सामने प्रस्तुत होती है।[21]

इस प्रकार महाभारत युद्ध की कोई एक निश्चित तिथि अभी तक निर्धारित नही की जा सकी है। इस विषय में संक्षिप्ततः यह अवश्य कहा जा सकता है कि खगोलीय गणना के प्रमाणों से महाभारत युद्ध की तिथि 15 वीं शताब्दी ई0 पू0 के लगभग ठहरती है जबकि पौराणिक आंकड़े इसे दसवी–नवीं ई0 पू0 बताते हैं। पुरातात्त्विक साक्ष्य इसके बाद की तिथि का समर्थन करते हैं।

स्वतन्त्रता के पश्चात् उत्तर भारत ने अनेक पुरास्थलों पर सर्वेक्षण एवं उत्खनन हुए है। इन उत्खननों से हमें विभिन्न संस्कृतियों की झलक मिलती है। विद्वानों की चेष्टा रही है कि भारतीय साहित्यिक परम्परा को कथानक एवं मिथक के दायरे से निकालकर तर्कपूर्ण आधार दिया जाये। भारत में पुरातत्वविदों द्वारा महाभारत की ऐतिहासिकता एवं मौलिक महाभारत काल की मूल संस्कृति पर प्रकाश डालने के लिए बहुसंख्यक प्रयास नहीं किए गए हैं फिर भी, वास्तविक इच्छाशक्ति के साथ जो एक प्रयास हुआ है वह भूमि पर कार्य करने वाले एक प्रख्यात पुरातत्वविद् प्रो. बी.बी. लाल द्वारा किया गया है।

पुरातात्त्विक साक्ष्यों के संदर्भ में हम इन संस्कृतियों के क्रम की विवेचना कर सकते हैं जिन्हें पुरातत्त्व ने महाभारत कथा के

कल्पित स्थानों को खोज पाने में सफलता पाई है। यह हरियाणा और राजस्थान की प्राचीन सरस्वती– दृषद्वती घाटी और उत्तर प्रदेश की गंगा घाटी के मध्य का क्षेत्र है।[22] बी. बी. लाल ने चित्रित धूसर पात्र परम्परा का सम्बन्ध महाभारत संस्कृति के साथ स्थापित किया है। महाभारत में उल्लिखित हस्तिनापुर, अहिच्छत्र, इन्द्रप्रस्थ, काम्पिल्य, कुरूक्षेत्र, बैराट और मथुरा आदि के निचले स्तरों से चित्रित धूसर पात्र परम्परा मिलने के कारण यह प्रतीत होता है कि इन सभी पुरास्थलों पर एक ही संस्कृति के लोग निवास करते थे। ऐसा माना जा सकता है कि चित्रित धूसर पात्र परम्परा के किसी चरण में महाभारत में वर्णित कौरव–पाण्डवों के युद्ध का सम्बन्ध रहा है।[23]

महाभारत युद्ध में प्रयोग हुए अधिकांश हथियार, जिनका कुरूक्षेत्र के महान युद्ध में प्रयोग हुआ था, धातु के बने मालूम पड़ते हैं जिसमें लोहा भी संम्भवतः शामिल था। दक्षिण एशिया में पुरातात्त्विक खोज से पता चलता है कि भारत में लोहे की तकनीक का विकास सिर्फ 1000 ई. पू. के लगभग हुआ। यह ±100 या 200 वर्ष होगा। लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इससे ज्यादा नहीं हो सकता है।[24] कुरूक्षेत्र, जो महाभारत युद्ध का स्थल है, वहाँ से कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य उजागर हुए हैं जो भगवानपुरा में की खुदाईयों से प्राप्त चित्रित धूसर मृदभांड से जुड़े हैं और जो उत्तरवर्ती हड़प्पा मृद्भांडो से घुले मिले हैं। भगवानपुरा के उत्खनन से चित्रित धूसर पात्र परम्परा के तीन चरण दृष्टिगत होते हैं। प्रथम चरण में भवनों का निर्माण बॉस–बल्लियों की दिवालें बनाकर किया गया था। द्वितीय चरण में मिट्टी की दीवालें बनायी जाने लगी थी। तृतीय और अन्तिम चरण में भट्ठे में पकी हुई ईंटों का प्रयोग भवन निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया था। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि भगवानपुरा के तीनों चरणों से लोहे की कोई सूचना नहीं मिली है।[25] इस प्रकार स्पष्ट है, महाभारत का संबंध जहाँ बी.बी. लाल ने चित्रित धूसर पात्र परम्परा से स्थापित कर, पुरातत्त्व के माध्यम से विवाद को सुलझाने का प्रयास किया है वही दूसरी तरफ भगवानपुरा, जो कुरूक्षेत्र, युद्ध स्थल के नजदीक है यहां से लोहे की प्राप्ति न होना तथा महाभारत सम्बन्धित अन्य पुरास्थलों से युद्ध के ठोस पुरातात्त्विक साक्ष्य नहीं मिलना कहीं ना कहीं संदेह प्रकट करते हैं।

महाभारत महाकाव्य के अनुशीलन में इतना ही कहा जा सकता है कि महाभारत एक महाकाव्य है। महाकाव्य के लक्षणों के अनुसार अतिशयोक्ति होना इसका स्वाभाविक गुण है। महाकाव्य के अन्तः साक्ष्यों के अनुसार यह एक ऐतिहासिक ग्रन्थ भी है। ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित महाकाव्य हमेशा मिथक एवं सच्चाई अथवा तथ्यों एवं कल्पित कथा का अनोखा मिश्रण होता है। वास्तव में कभी–कभी ही यह पूर्ण कहानी या पूर्ण सच होता है। अतः वर्तमान स्थिति में उचित प्रश्न हो सकता हैः कितनी सच्चाई एवं कितना मिथक, सिर्फ मिथक या सच्चाई नहीं।

संदर्भ सूची

1 पाण्डेय, अरुण प्रकाश, 'महाभारत कालीन संस्कृति के पुरातात्त्विक आयाम', 2009, पृ. 17
2 सिंह उपिन्द्र, 'दिल्लीः प्राचीन इतिहास', 2010, पृ. 109
3 गुप्ता, एस.पी. एवं रामचंद्रन, के.एस., 'महाभारत मिथ एण्ड रिऐलिटीः डिफरिंग व्यूज', 1976, पृ. 3
4 फड़के, एच. ए., हरियाणा एन्शियन्ट एण्ड़ मिडिवल, पृ. 17
5 पाण्डेय, अरूण प्रकाश, पूर्वनिर्दिष्ट', 2009, पृ. 4
6 वही, पृ. 19
7 नलवा, जसवन्त सिंह 'ऐतिहासिक परिप्रेक्ष में कुरूक्षेत्र', 2008, पृ. 21–22
8 गुप्ता, एस.पी. एंड रामचंन्द्रन, के. एस., 'पूर्वनिर्दिष्ट', 1976, पृ. 4
9 सिंह, उपिन्द्र, 'दिल्लीः प्राचीन इतिहास', 2010, पृ. 97
10 पाण्डेय, अरूण प्रकाश 'महाभारत कालीन संस्कृति के पुरातात्त्विक आयाम', 2009, पृ. 21
11 सिंह, उपन्द्रि, पूर्वनिर्दिष्ट, 2010, पृ. 97
12 वही, पृ. 100
13 वही, पृ. 104
14 पाण्डेय, अरूण प्रकाश, 'महाभारत कालीन संस्कृति के पुरातात्त्विक आयाम', 2009, पृ. 81
15 रॉय, एस. बी. 'डेट ऑफ महाभारत बैटल', पृ. 124
16 फड़के, एच. ए., पूर्वनिर्दिष्ट, प्रथम संस्करण, 1990, पृ. 17
17 पाण्डेय, अरूण प्रकाश, 'महाभारत कालीन संस्कृति के पुरातात्त्विक आयाम', 2009, पृ. 23
18 वही, पृ. 24
19 सूरजभान, प्रीहिस्टारिकल ऑर्किलॉजी शरावती एण्ड़ दृषदवती वैली, पी. एच. डी. थीसिस 1972
20 काणे, पी. वी., हिस्ट्री ऑफ हिन्दू धर्मशास्त्रा, पृ. 557–58, 681
21 साठे, श्रीराम, सर्च फॉर दी ईयर ऑफ महाभारता वॉर, 1983, पृ. 35
22 सिंह, उपिन्दर, दिल्लीः प्राचीन इतिहास', 2010, पृ. 120
23 पाण्डेय, जय नारायण, 'पुरातत्व विमर्श, 2000, पृ. 521
24 सिंह, उपिन्दर, पूर्वनिर्दिष्ट, 2010, पृ. 120
25 पाण्डेय, जय नारायण, पूर्वनिर्दिष्ट, 2000, पृ. 523